कालमेघ

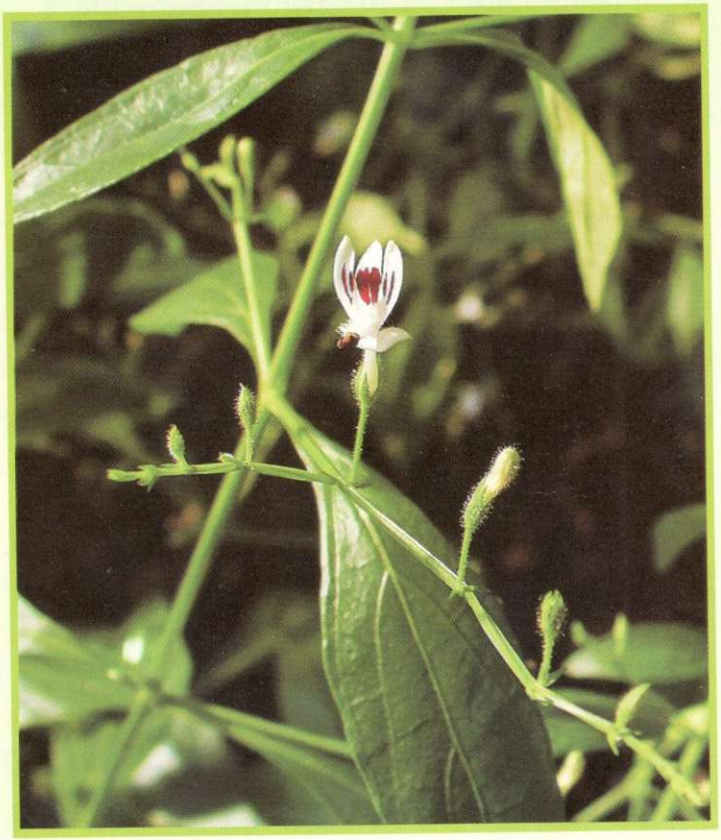

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

कालमेघ

वानस्पतिक नाम - Andrographis paniculata

कालमेघ एक महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। इसका तना, पत्ती, बीज एवं जड सभी उपयोग में आते है। यह खरपतवार के रूप में खरीफ में पड़ती जगहों पर खेतों की मेढों पर उगता है। यह सीधा बढनें वाला शाकीय पौधा है। इसकी लम्बाई 1–3 फुट तक होती है। यह अनेंक छोटी शाखाओं में विभाजित होकर चारों ओर फैल जाती है और आसपास की झाडियों पर चढ जाती है।

कालमेघ के पत्ते 6–8 सेमी., लंबे होते है। फूल, गुलाबी रंग के लगभग 1 सेमी. लंबे होते हैं तथा खुली, लंबी, फैली हुई शाखाओं पर लगते है।

1. **उपयोग** :– कालमेघ की जड को छोडकर समूचा पौधा औषधि में काम आता है। कालमेघ बलवर्धक एवं पौष्टिक होता है। यह ज्वर कृमि, पेचिश, दुर्बलता एवं पेट के आफरे में उपयोगी है। बच्चो के जिगर तथा अपच के रोग में यह लाभपद्र है। परीक्षणों से देखा गया है कि कालमेघ में एंटीबायोटिक तथा टाइफाइड ज्वर के तथा कुछ अन्य जावाणुओ को रोकने वाले तत्व है। मुख्य रूप से इसके चूर्ण, स्वरस व क्वांथ का प्रयोग करते हैं, हौम्योपैथिक में कालमेघड्रोप प्रयुक्त की जाती है।

2. **जलवायु** :– कालमेघ समशीतोष्ण जलवायवीय व खरीफ की फसल है। औसत वर्षा 75–90 सेमी. होनी चाहिए। परन्तु यह 125–160 सेमी. वर्षा वाले स्थानों पर भी यह होती है।

3. **भूमि** :– यह सभी प्रकार की भूमि में अनुकूलन की क्षमता रखता है। यह फसल अच्छे जल निकासवाली किसी भी प्रकार की भूमि में हो सकती है, लेकिन अधिक पैदावार के लिए बलुई दोमट भूमि अधिक उपयुक्त है।

4. **भूमि की तैयारी** :– मई–जून में खेत को जोतना चाहिये। जुताई करने से पहले 15–20 टन गोबर की खाद खेत में डाल दे।पाटा चलाकर मिट्टी को भुरभुरा बना लेना चाहिए।

5. **बीज की मात्रा** :– इसकी खेतीं के लिए 5–6 किग्रा. एक हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

6. **नर्सरी तैयार करना** :– कालमेघ की नर्सरी तैयार करने के लिए 15 जून के लगभग 1 एकड क्षेत्र की रोपाई हेतु 1 किग्रा. बीज को 200 वर्गमीटर क्षेत्र में 1 मीटर चौडाई की क्यारीयों में छिड़काव विधि से बुवाई कर मिट्टी की हल्की परत से बीज को ढककर सिंचाई करें। जब पौधे लगभग 30–35 दिन के हो जावें तो खेत की क्यारीयों में रोपाई करते है।

7. **रोपाई करना** :– जुलाई माह में 30x30 सेमी. की दूरी पर पौधा रोपण करें अथवा रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करें। प्रति एकड 44,400 पौधों की आवश्यकता होती है।

8. **खाद एवं उर्वरक** :– कालमेघ की उत्तम उपज लेने के लिए सिंचित फसल में 20 किग्रा. नाइट्रोजन, 30 किग्रा. फास्फोरस एवं 20 किग्रा. पोटाश प्रति है0 बुआई के समय देना चाहियें। 15 किग्रात्र नत्रजन प्रथम सिंचाई के समय देना चाहिये।

9. **निराई–गुडाई** :– कालमेघ के फसल में खरपतवार अधिक होते हैं जिससे पौधे की वृद्वि पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। अतः नियंत्रण हेतु रोपाई के 30 दिन बाद निराई–गुडाई करते रहना चाहिए।

10. **सिंचाई** :– सिंतबर माह में वर्षा न होने पर एक सिंचाई अवश्य करनी चाहिए जिससे

पौधों की वानस्पतिक वृद्वि अधिक होती है।

11. **राग व कीट** :– सामान्यतः इसमें रोग का प्रभाव नही होता है। कीटों के नियंत्रण हेतु मेलथियान दवा 2 मि.ली. एक लीटर पानी में घोल बना कर प्रति हैक्टेयर छिडकाव करें।

12. **फसल की कटाई** :– इसकी फसल 4–5 माह में पक जाती है जब अधिकांश बीज पूर्ण रूप से पक जाये तब काटना चाहिये। पौंधो को काटकर छाया में सुखाना चाहिये। 8 दिन के अंतराल पर पलटाई करे। पलटते समय ध्यान रखे की पत्तियां कम से कम झडें पूर्ण रूप से सूखे पौधों को जूट की बोरियों में जिसमें प्र्याप्त वायु संचार हो में भरकर सग्रहण करे।

13. **उपज व आय व्यय** :– कालमेघ का पूर्ण रूप से सूखा हुआ पौधा ही विक्रय होता है। कालमेघ की फसल से प्रति है0 4–5 क्विंटल बीज तथा 30–35 क्विंटल शुष्क शाक मिलती है। इसकी खेतीं पर 10000 रू. प्रति है0 का खर्च होता है। इसका बाजार भाव 100 रू. प्रति किलोग्राम बीज, पत्तियां 30–60 रू. प्रति किग्रा. है इसकी खेती 25–30 हजार रू. तक शुद्व लाभ अर्जित कर सकते है।

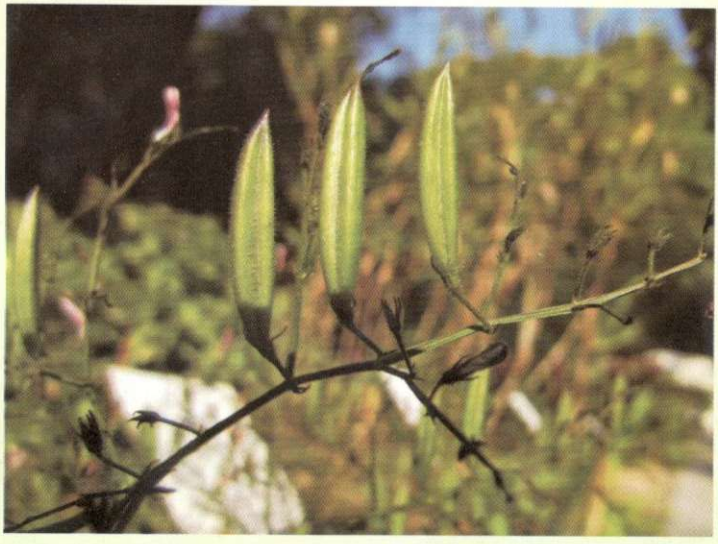

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर

फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975

Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com